खंडित गीता से उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य की गतिविधि पूरे समाज को प्रभावित करती है; परन्तु आज मनुष्य अपने शरीर रूपी रथ अर्थात् स्व के रथ के प्रति सोचते–2 स्वार्थी बन चुका है। अपने स्वार्थ के कारण ही मनुष्यों ने समाज को इस स्तर पर ला खड़ा किया है कि प्रत्येक मनुष्य आज दुःखों एवं रोगों से पीड़ित है।
परन्तु, युगों–2 से चल रही भक्ति से, वेद–शास्त्रों के निरन्तर अभ्यास से एवं पुरातन संस्कृति के रीति–रिवाज़ों का ज्यों–का–त्यों अनुकरण करने के पश्चात् भी समाज की तो दुर्गति ही हो रही है, शोषण भी हो रहा है। तो इसका कारण क्या?
समाज का शोषण मनुष्य की महान भूल का प्रतिफल है और वह भूल है– कृष्ण को गीता का भगवान मानना एवं भगवान को सर्वव्यापी मानना।
कैसे?

भ्रष्टाचार:– परमपिता परमात्मा ही आकर हमें आध्यात्मिकता का परिचय कराते हैं, जिससे हमें हमारे स्व अर्थात् आत्मा का बोध होता है। इसके पहले हम स्वयं को शरीर ही समझते थे। आत्मा मूल रूप से श्रेष्ठ और अविनाशी होती है और शरीर विनाशी और भ्रष्ट होता जाता है। मन में उत्पन्न हुए संकल्प एवं मतें यदि आत्मा के प्रति हों तो वह श्रेष्ठ कहा जाएगा, शरीर के प्रति हों तो भ्रष्ट कहा जाएगा। इन्हीं मतों का अनुकरण एवं आचरण करने से श्रेष्ठाचार तथा भ्रष्टाचार का जन्म होता है। शरीर हेतु उत्पन्न हुई मन की कामनाएँ तथा लोभ ही भ्रष्टाचार को जन्म देता है।

परन्तु, भयंकर कटु सत्य तो यह है कि गीता में कृष्ण का नाम डालने से तथा ईश्वर को सर्वव्यापी करने से भ्रष्टाचार को विस्तारित रूप का प्रोत्साहन मिला।
जैसे.....

गीता में काम विकार को 'महाशत्रु' की संज्ञा दी गई है; परन्तु दुनिया वाले इस बात को स्वीकार नहीं करते; क्योंकि गीता के तथाकथित रचयिता–कृष्ण को 8 पटरानियाँ एवं 16108 गोपियाँ और उनके बच्चे भी शास्त्रों में प्रसिद्ध हैं। खंडित अर्थात् कृष्ण की गीता का अनुकरण करने से मनुष्य भ्रष्ट इन्द्रियों को नियंत्रित न कर, कामविलास के भोग को भोगते रहे। यदि गीता का रचयिता शिव–शंकर भोलेनाथ को मानते तो संसार काम महाशत्रु वाली बात को सहज स्वीकार करता; क्योंकि शंकर तो अमोघ वीर्य एवं कामदेव को भस्म करने वाले रूप में प्रसिद्ध है।

गीता में जन्म–मरण के चक्कर में आने वाले कृष्ण का नाम डालने से तथा कृष्ण को भगवान मानने से, परमात्मा को भी सर्वव्यापी कर दिया और हर मनुष्य अपने को शिवोऽहम् समझ बैठ गया; परन्तु मनुष्य होते तो विकारी ही हैं ना! (पैदाइश भी विकार से ही है) और वह अपनी विकारी बुद्धि से उत्पन्न हुई विकारी मत को भी शिव मत मान अनुकरण करने लगा। विकारी एवं भ्रष्ट मत का आचरण करते–2 पूरी दुनिया, पूरा समाज भ्रष्टाचारी हो गया।

बढ़ती जनसंख्या:– बढ़ता भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट इंद्रियों का आचरण ही बढ़ती जनसंख्या का मूल कारण है। गीता में कृष्ण का नाम डालने से उत्तरोत्तर होते हुए विकारी मनुष्यों ने कृष्ण को ही अपना आदर्श तथा प्रेरणास्तोत्र मान लिया। कृष्ण तो शास्त्रों में रासलीला के लिए मशहूर है। इससे मनुष्य भी काम–वासना के रासलीला में अपना जीवन व्यतीत करने लगा। काम विकार पर नियंत्रण न होने से मनुष्यों की जनसंख्या आज इस स्तर पर पहुँची है कि मनुष्य आज चाह कर भी जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं पा सकता, जो कि हर देश की एक सामाजिक समस्या बन चुकी है। परिवार नियोजन जैसी योजनाओं का निरंतर प्रयास करने के बावजूद सरकार बढ़ती जनसंख्या पर काबू पाने में असमर्थ है। यदि मनुष्य गीता का भगवान शिव–शंकर को ही जानते और मानते होते तो काम को महाशत्रु मान मनुष्य काम विकार को

त्यागता, जो कि बढ़ती जनसंख्या का मूल कारण है। शिव–शंकर की गीता ही असल परिवार नियोजक योजना है, इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

नारी का अनादर:– नर बुद्धिवादी होता है और नारी भावनावादी होती है। अनेक युगों से नारियों पर अत्याचार एवं शोषण होते आए हैं। इक्कीसवीं सदी आने पर भी नारियों के जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ और जिन्हें हम परिवर्तन समझ रहे हैं, वह सिर्फ ऊपरी दिखावा है; परन्तु वास्तविक सत्य तो यही है कि नारी जात आज भी तन–मन–धन से अबला ही है। बच्ची से लेकर वृद्ध माता भी स्वयं को इस पूरे समाज में असुरक्षित ही अनुभव करती है। इसका कारण भी खंडित गीता ही है। गीता में कृष्ण का नाम डालने से कृष्ण का चरित्र ही सामने आता है। कृष्ण समान आकर्षक पति एवं कृष्ण समान दुलारे बच्चे की चाह में बावरी हो अपने पति तथा बच्चों की कटपुतली बनकर रह जाती है। अपने पति को परमेश्वर मान उनकी विकारी मतों को ईश्वरीय मत समझकर चलने से और भी दुर्गति हुई। जिनको गुरु बनाया, वह भी पुरुष, जिन्होंने नारी को ''नर्क का द्वार'' कहा। जिससे प्रत्येक नारी के स्वाभिमान को मिटाने का घिनौना प्रयास किया गया।

यदि गीता का भगवान शिव–शंकर को मानते तो शंकर में शक्ति का प्रमाण रूप 'अर्धनारीश्वर' का गायन है, जो कि नर–नारी के समानता का प्रतीक है; नारी को भी समान प्रतिष्ठावान संस्कृति के अनुकूल अभय जीवन जीने का अधिकार प्राप्त होता।

कृष्ण का अनुकरण करने से पुरुष अनेक स्त्रियों को रखने लगे, स्त्रियों को भोगविलास का रूप मानने लगे। क्या यह एक नारी का तिरस्कार नहीं है? क्या उनकी भावनाओं का उपहास नहीं किया जा रहा? यदि मनुष्य गीता के रचयिता शिव–शंकर का अनुकरण करता तो शंकर समान एक पत्नीव्रत जीवन जगता। एक नारी सदा ब्रह्मचारी।

आतंकवाद:– आतंकवाद सिर्फ आपसी भेदभाव तथा मन–मुटाव का परिणाम नहीं है; परन्तु यह भी खंडित गीता से उत्पन्न हुई एक पीड़ा है। गीता में साकार कृष्ण का नाम डालने से निराकार उपासक गीता की अवहेलना करने लगे, उपहास करने लगे। इससे अनेक मतों एवं अनेक धर्मों तथा संस्कृतियों का निर्माण हुआ, अनेक भाषाओं से अनेक प्रान्तों एवं अनेक राज्यों का निर्माण हुआ, एकता के शुद्ध एवं पवित्र स्थान को अनेकता रूपी राहु ने ग्रस लिया, एक अखण्ड सम्पूर्ण महान भारत विभाजित होकर अनेक टुकड़ों में खण्ड–2 हो गया और अपने धर्म, प्रान्त, राज्य एवं राज्यभाषा को महान जताने की होड़ में मानवता को भूलकर मनुष्य इस तरह का भयानक आतंक मचाने लगा कि दोषी–निर्दोषी सभी त्रस्त होने लगे। आज सभी वाद–विवादों में सबसे गंभीर एवं विस्फोटक स्वरूप आतंकवाद का है। यदि गीता का भगवान निराकार शिव–शंकर को मानते तो अनेकता का जन्म ही नहीं होता; क्योंकि निराकार एवं नग्न शंकर का गायन हर धर्मों में है– हिन्दुओं में 'आदिदेव', जैनियों में 'आदिनाथ', मुसलमानों में 'आदम', ईसाईयों में 'एडम' इत्यादि स्वरूपों में। यदि ऐसा होता तो आज सभी धर्म वाले गीता को ही सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि के रूप में अपना धर्मग्रन्थ मानते एवं अनुकरण करते; परन्तु खण्डित गीता से भारत सहित पूरा विश्व आज खण्ड–2 हो गया और इसके विपरीत, अखण्ड गीता ही सृष्टि को 'वसुधैव कुटुम्ब' का स्वरूप दिलाती है। तो आतंकवाद जैसे अभिशाप का अन्त भी अखंड गीता से ही सुनिश्चित है।

शेष इतना ही नहीं; परन्तु इनके उपरान्त अनेक समस्याओं की उत्पत्ति खण्डित गीता से होती है; जैसे– बढ़ती जनसंख्या, गरीबी एवं बेरोज़गारी, जिससे चोरी–चकारी जैसे अभद्र कर्मों का आगमन होता है। व्यभिचार वृत्ति वेश्यालय का रूप धारण कर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से गन्दगी तथा बीमारियों को विस्तारित रूप प्रदान करती है। इन सभी सामाजिक समस्याओं का निर्माण इसी कृष्ण की खण्डित गीता की एकज भूल से हुआ है। यदि गीता का भगवान अर्थात् गीता के रचयिता शिव–शंकर के प्रत्यक्ष–प्रवृत्त स्वरूप को समझकर, मानकर, उनके बताए हुए मार्ग पर चलें, तो हम स्वयं के ही नहीं; परन्तु समस्त

मानव जात तथा समस्त विश्व के सद्‌गति का कारण बन सकते हैं; अन्यथा नियति तो अटल है ही।